(प्रभु के कार्य में) आप स-फ-ल-ता कैसे पढ़ते हैं? (17:16-34)

यूनानी-रोमी संसार के सांस्कृतिक और दार्शनिक केन्द्र अथेने में पौलुस अकेला था। बहुत से लोग अथेने में उसके काम के निम्न तथ्य उद्धृत करते हुए ''पौलुस की सबसे बड़ी असफलताओं में से एक'' कहते हैं: (1) लूका ने कुछ लोगों द्वारा ही उन्हें स्वीकार करने का उल्लेख किया। (2) नये नियम में कभी भी अथेने की मण्डली की बात नहीं कही गई। (3) पौलुस ने जहां-जहां काम किया उनमें से बहुत से स्थानों पर उसके सहयात्री बने (20:4), परन्तु अथेने में उसके किसी भी सहयात्री का नाम नहीं आया। (4) पौलुस के पत्रों में अथेने के किसी मसीही को कभी सलाम नहीं लिखा गया। इन तथ्यों पर विचार करने पर यह समझने में कठिनाई नहीं होती है कि कुछ लोग अथेने में पौलुस के काम को असफलता क्यों कहते हैं। परन्तु क्या यह उसकी असफलता थी?

संसार सफलता को सरसरी तौर पर सम्पत्तियों, प्राप्तियों, शिक्षा के स्तर, बाहरी दिखावे, प्रभाव और शक्ति से मापता है। कलीसिया में सफलता को इमारतों से, भीड़ से, कार्यक्रमों से, लोगों द्वारा स्वीकार करने और उत्तेजना के हिसाब से देखकर हम में से कई लोग सफलता की उसी कसौटी के उसी जाल में फंस जाते हैं । प्रभु के कार्य में वास्तविक ''सफलता'' क्या है?

मैं इस पाठ को जितना सम्भव हो सके[1] उतना व्यक्तिगत बनाता हूं और सुझाव देता हूं कि यदि आप निम्न मापदण्ड को पूरा करते हैं तो आत्मिक रूप में आप सफल व्यक्ति हैं।

यदि बुराई और अज्ञानता से आपका जी जल सकता है (17:16)

अथेने की शान-ओ-शौकत पहले ही अतीत की बात बन चुकी थी, परन्तु पौलुस के दिनों में भी यह नगर एक ऐसे शक्ति केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध था जिसे नज़रअंदाज़ करना असम्भव था। बहुत से महानतम विचारक, वक्ता, तथा कलाकार अथेने में रहने लगे थे।

लोकतन्त्र की अवधारणा का जन्म भी वहीं से हुआ था। संसार पर विजय पाने की प्रक्रिया में, रोमियों ने अथेनवी संस्कृति और यूनानी भाषा का विस्तार कर दिया था। अभी भी बहुत से लोग अथेने को संसार का महानतम विश्व-विद्यालयीय नगर मानते थे।[2]

यदि विश्वासी भाई पौलुस को जहाज़ से लेकर आए, जैसा कि लगता भी है, तो उन्होंने सम्भवत: उसे बन्दरगाह पर ही ''अलविदा'' कह दिया होगा, जो कि नगर से लगभग पांच मील की दूरी पर थी। अथेने की ओर जाते हुए, पौलुस को सबसे पहले अक्रोपुलिस ही दिखाई दिया होगा,[3] जिसे चमचमाते सफेद और सुनहरे पारथिनोन[4] से सजाया गया था, बहुत से लोग इसे मनुष्य द्वारा निर्मित सबसे खूबसूरत इमारत मानते थे। पारथिनोन के बाहर अथेने की रक्षक देवी अथेना की मूर्ति[5] थी। प्राचीन लेखकों के अनुसार, यह मूर्ति इतनी ऊंची थी, कि अथेना के भाले पर पड़ रही सूर्य की किरणों की चमक बन्दरगाह से भी दिखाई देती थी।

पौलुस ने उन भाइयों से जो उसे अथेने में छोड़कर गए थे, कहा था कि वे सीलास और तीमुथियुस को कहें कि जितनी जल्दी हो सके, उसके पास आएं (आयत 15)। शायद पौलुस की योजना अथेने में अपने साथियों के इकट्ठे होने पर काम शुरू करने की थी। परन्तु, जो बुराई और अज्ञानता उसने देखी, उसे वह अनदेखा नहीं कर पाया। जिधर भी उसने मुंह फेरा उधर उसे अन्धविश्वास के भय से भरे मूर्तिपूजकों के त्यौहार, जुलूस, बलिदान और समारोह ही मिले होंगे। उसने छोटी-छोटी मूर्तियां और मन्दिर भी देखे होंगे (जिनमें संसार का सबसे बड़ा मन्दिर अर्थात ज्यूस[6] का मन्दिर भी शामिल था)। प्रहसन लेखक प्रिटोनियुस ने लिखा था कि अथेने में आदमी की अपेक्षा देवता को ढूंढ़ना आसान था। पौलुस एक वेदी के पास से गुज़रा, जिस पर लिखा हुआ था ''अनजाने ईश्वर के लिये'' (आयत 23)। इस कारण, ''जब पौलुस अथेने में [सीलास और तीमुथियुस] की बाट जोह रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उसका जी जल गया'' (आयत 16)।

पौलुस इन मूर्तियों को देखकर ही नहीं बल्कि इनके सामने इनकी उपासना करने वाले लोगों और बलिदानों से भी परेशान हो गया था जो इन देवताओं के लिए रखे गए थे। प्रत्येक फूलदान सूखे फूलों से भरा हुआ था, गले हुए फलों के प्रत्येक बर्तन में किसी का दिल दिखाई दे रहा था। आज, अथेने में जाने वाले लोग प्राचीन नगर के खण्डहरों को कला एवं वास्तुकला का नाम देते हैं। जब पौलुस ने मूर्तियों और भव्य मन्दिरों को देखा था, तो उसे उनमें वास्तुकला की सुन्दरता नहीं, बल्कि बुराई की कुरूपता दिखाई दी थी। उसे सांस्कृतिक विकास नहीं बल्कि आध्यात्मिक नंगेज़ दिखाई दिया था। उसे वहां मन का ज्ञान नहीं बल्कि आत्मा की अज्ञानता दिखाई दी थी।[7] बाद में उसने लिखा, ''... अन्यजाति जो बलिदान करते हैं, वे परमेश्वर के लिए नहीं, परन्तु दुष्टात्माओं के लिए बलिदान करते हैं'' (1 कुरिन्थियों 10:20क)।[8]

ज्ञान का केन्द्र अन्धविश्वास का केन्द्र कैसे हो सकता है ? अथेने 1 कुरिन्थियों 1:21 की सच्चाई का सजीव प्रदर्शन था: ''... परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना [और न जान सकता है]।'' रोमियों 1:18-32 उसी की व्याख्या है जो कुछ उस ''ज्ञान सम्पन्न'' नगर में हुआ।

जो कुछ पौलुस ने अथेने में देखा उससे उसका जी जल गया। अपने आस पास

देखने पर क्या हमारा जी उससे जलता है, या पाप तथा खोए हुए लोगों से भरे संसार के प्रति हमारे हृदय बहुत कठोर हो गए हैं ? कई लोग इस बात से, कि क्या सही है और क्या गलत ''कुछ अधिक ही उत्तेजित होकर'' व्याकुल हो उठते हैं; परन्तु यीशु व्याकुल नहीं हुआ था (मत्ती 9:36; यूहन्ना 2:17), न ही पौलुस हुआ (रोमियों 9:1-3)। आमतौर पर, जीवन में तब तक कुछ महत्वपूर्ण नहीं होता जब तक इसमें कोई रोमांच न हो। अज्ञानता तथा बुराई के विषय में आप कितने रोमांचित हैं ?

गलती के सुधार के लिए आप जो कुछ कर सकते हैं, यदि वह करें (17:17-19, 21)

हम पौलुस की जगह होते तो क्या करते ? क्या हम उनसे बहुत प्रभावित होते ? क्या हम निराश होकर छोड़ जाने के लिए तैयार हो जाते ? क्या हम यह कहते कि, ''मैं कुछ नहीं कर सकता। मैं हज़ारों के बीच अकेला हूं'' ? नकारात्मक उत्तर के बजाय, पौलुस ने स्थिति को सुधारने के लिए जो कुछ वह कर सकता था, किया। यदि आप गलती को सुधारने के लिए, *जो कुछ वह कर सकता है, कर सकते हैं* तो मैं सुझाव देता हूं कि आत्मिक रूप से आप एक सफल व्यक्ति हैं। जितना हम कर सकते हैं परमेश्वर कभी भी उससे अधिक की अपेक्षा हमसे नहीं करता। परन्तु जितना हम कर सकते हैं, उसकी अपेक्षा वह अवश्य करता है !

पौलुस क्या कर सका ? वह सुसमाचार का प्रचार कर सका था। सीलास और तीमुथियुस अभी पहुंचे नहीं थे,[9] फिर भी पौलुस ने प्रचार करना आरम्भ कर दिया। ''सो वह आराधनालय में यहूदियों और भक्तों से और चौक में जो लोग मिलते थे, उन से हर दिन वाद-विवाद[10] किया करता था'' (आयत 17)। अपनी आदत के अनुसार, वह सब्त के दिन आराधनालय में गया (आयत 2)। रविवार से शुक्रवार तक, चौक अर्थात अगोरा में ''जो लोग उसे मिलते थे'' वह उन सब के साथ बाइबल की सच्चाइयों का वर्णन करता था। अन्य नगरों में, सांस्कृतिक, व्यापारिक, और धार्मिक केन्द्र को अगोरा कहा जाता है।[11] अथेने में, अगोरा शैक्षणिक केन्द्र भी था जहां दार्शनिक लोग इकट्ठे होते थे। सुकरात, प्लैटो, अरस्तु ने अथेने के चौक (अगोरा) में ही पढ़ाया था।

आयत 21 में लूका ने यह सम्पादकीय टिप्पणी जोड़ दी थी, ''(इसलिए कि सब अथेनवी और परदेशी[12] जो वहां रहते थे, नई-नई बातें कहने और सुनने के सिवाय और किसी काम में समय नहीं बिताते थे)।''[13] वे सच्चाई की खोज करने का दावा करते थे,[14] परन्तु वास्तव में वे कुछ नये की खोज में रहते थे। दार्शनिकों को निष्कर्ष पर पहुंचने के बजाय नये-नये विचार प्राप्त करना अच्छा लगता है। हो सकता है कि अथेनियों की ''कुछ नया'' सुनने की स्वाभाविक प्रवृत्ति सराहनीय न हो, परन्तु इससे पौलुस को सुसमाचार सुनाने का अच्छा अवसर मिल गया।

डिनो रूसो नामक प्रचारक, जो अथेने में काम करता था, का कहना है कि अथेने के लोग आज भी वैसे ही हैं; अथेने में आज भी आम तौर पर एक दूसरे से मिलने पर यही पूछा

जाता है ''क्या समाचार है?'' परन्तु, वह टिप्पणी करता है कि पौलुस के समय में विषय फिलॉसफी थी, जबकि आज राजनीति है; एक अथेनेवासी को यह विचार प्रिय लगता है कि ''काश! वह केवल चौबीस घण्टे के लिए ही सरकार को चला पाए।''

जिन्होंने चौक में पौलुस के साथ बहस की थी, उनका सम्बन्ध अथेने में विचार के दो बड़े विद्यालयों से था। आयत 18क में कहा गया है कि ''तब इपिकूरी और स्तोइकी पण्डितों में से कितने [पौलुस से] तर्क करने लगे।'' इपिकूरी लोग दार्शनिक इपिकूर (340-270ई.पू.) के अनुयायी थे। आज वे मनुष्य के अस्तित्व के उद्देश्य को ''भोगविलास के पीछे'' भागना बताने के लिए जाने जाते हैं। ''भोगविलास'' से इपिकूरी शिक्षकों का भाव था कि कष्ट और दुख का न होना। धर्म के विषय में इपिकूरी लोग भौतिकवादी देववादी थे अर्थात वे देवताओं के अस्तित्व को मानते थे, परन्तु सोचते थे कि उन्हें संसार से इतनी दूर निकाल दिया गया है कि वे इसके कामों को प्रभावित न कर सकें। यद्यपि इपिकूरी शिक्षकों ने आनन्द की परिभाषा इन्द्रियों के सम्बन्ध में नहीं दी, परन्तु इस फिलॉसफी का कामुकता पर कोई नियन्त्रण नहीं था। अन्ततः, कई लोगों के लिए, यह स्थिति एक परिचित दर्शन में बदल गई कि ''खाओ-पीयो, और आनन्द करो क्योंकि कल तो मर ही जाना है'' (देखिए 1 कुरिन्थियों 15:32)। आज ''इपिकूर'' शब्द का प्रयोग खाने-पीने के शौकीन चटोरे व्यक्ति के लिए किया जाता है।

स्तोइकी लोग दार्शनिक ज़ीनो (लगभग 340-265 ई.पू.) के चेले थे। उनके लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द स्तोइकी ''ड्योढ़ी'' के लिए यूनानी शब्द *स्तोया*[15] से निकला है। ज़ीनो अथेने के चौक पर स्थित ''रंग किए हुए स्तोया'' में पढ़ाता था, और वह अभी भी उनके इकट्ठे होने का प्रमुख स्थान था।[16] स्तोइकी लोग ड्यूटी को सबसे अधिक महत्व देते थे; वे स्वशासन तथा शरीर का इन्कार करने पर ज़ोर देते थे। धर्म के विषय में, स्तोइकी लोग भौतिक सर्वेश्वरवादी थे अर्थात उनके लिए परमेश्वर एक निर्व्यैक्तिक शक्ति था जो संसार की हर वस्तु में व्याप्त है। उनका मानना था कि जीवन में उनका भाग्य पहले से ही तय है और जो कुछ भी हो रहा है, उन्हें वह स्वीकार कर लेना चाहिए। आज ''स्तोइकी'' शब्द का इस्तेमाल हम ऐसे व्यक्ति के लिए करते हैं जो भौतिक और भावनात्मक पीड़ा से उदासीन हो। इपिकूरी फिलॉसफी अन्ततः चटकोरेपन में, जबकि स्तोइकी फिलॉसफी मनुष्य की आत्मनिर्भरता की बात को बढ़ावा देकर घमण्ड में बदल गई।

इपिकूरी और स्तोइकी लोग यूनानी फिलॉसफी के विपरीत विचारों का प्रतिनिधित्व तो करते थे, परन्तु, इन फिलॉसफियों में बहुत कुछ सामान्य था: दोनों में ही व्यक्ति तथा उसकी योग्यताओं को महत्व दिया जाता था। इनमें से कोई भी व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर की आवश्यकता को स्वीकार नहीं करता था, न ही कोई मृत्यु के पश्चात विवेकपूर्ण अस्तित्व को मानता था। दोनों ही सच्चाई के सम्बन्ध में हठधर्मी कथनों से परेशान थे। इसलिए दोनों दर्शनों से जुड़े लोग पौलुस की शिक्षा से भयभीत थे।

लूका के अनुसार, वचन के विषय में दार्शनिकों में भिन्नता थी। ''और कितनों ने कहा, यह बकवादी क्या कहना चाहता है?'' (आयत 18ख)। ''बकवादी'' यूनानी शब्द स्पर्मोलोजोस का अनुवाद है जो एक मिश्रित शब्द ''बीज'' (*स्पर्म*) के साथ उस शब्द

का मेल है जिसका अर्थ ''उठाना'' (*लिगो*) है।[17] मूलत: इसका अर्थ है ''बीज उठाने वाला,'' अर्थात सीड-पिकर और यह उन निकम्मे पक्षियों के लिए प्रयुक्त होता था जो इधर-उधर से बीज उठाकर अपना निर्वाह करते थे। ''सीड-पिकर'' या बीज उठाने वाला अथेने की गंवारू बोली में उस धार्मिक प्रचारक को कहा जाता था जो बहुत से स्रोतों से विचार इकट्ठे करके एक मूल्यहीन दोगली सी फिलॉसफी बना लेता था।[18]

''परन्तु औरों ने कहा; वह अन्य देवताओं का प्रचारक मालूम पड़ता है, क्योंकि वह यीशु का, और पुनरुत्थान का सुसमाचार सुनाता था'' (आयत 18ग)। पौलुस के विषयों को देखिए। अथेने में पौलुस के प्रयासों को असफल बताने वाले कहते हैं कि पौलुस ने वहां देखा कि फिलॉसफी अप्रभावकारी है, सो उसने कुरिन्थुस में जाकर अपना ढंग बदल लिया और ''यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह'' (1 कुरिन्थियों 2:1, 2) का प्रचार करने लगा। परन्तु, लूका के अनुसार, पौलुस का मूल संदेश अथेने में भी वही था जो कुरिन्थुस में था। यूनानी शब्द के अनुवाद ''प्रचार'' का अक्षरश: अर्थ ''सुसमाचार का प्रचार करना'' है। ''शुभ समाचार'' की मुख्य बात ''यीशु का जी उठना'' था।

अथेने के लोग पौलुस की बातें समझ गए थे, परन्तु वे जानना चाहते थे कि उसके कहने का क्या अर्थ है। अपनी सोच के अनुसार उन्होंने कहा कि पौलुस ''अन्य देवताओं का प्रचारक'' है। बहुवचन रूप ''देवताओं'' पर ध्यान दें। पौलुस द्वारा ''यीशु और जी उठने'' का प्रचार करने पर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वह दो देवताओं की शिक्षा दे रहा है जिन में से एक का नाम ''यीशु'' और दूसरे का नाम ''पुनरुत्थान'' है। उनके बहुत से देवता अपने गुणों जैसे सत्य तथा सुंदरता आदि से पहचाने जाते थे, इसलिए स्पष्टत: उन्होंने अनुमान लगा लिया कि *anastasis* (अर्थात ''पुनरुत्थान'') किसी देवता का नाम है।[19]

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि अनुवादित वाक्यांश ''अन्य देवताओं'' का मूल अर्थ ''बाहर के दुष्टात्मा'' था। यूनानियों के दिमाग में, दुष्टात्मा वह व्यक्ति होता था जो मर चुका हो (प्राय: एक दुष्ट व्यक्ति), परन्तु जिसकी आत्मा भटक रही है।[20] वे पहले ही हजारों दुष्ट आत्माओं की पूजा करते थे और अब बाहर के इस सीड-पिकर ने नये देवताओं की ओर उनका ध्यान खींच लिया था!

हो सकता है कि उन्होंने पौलुस को समझने में भूल की हो, परन्तु उसने उनकी जिज्ञासा को बढ़ा दिया था, सो ''वे उसे अपने साथ अरियुपगुस पर ले गए'' (पद 19 का)। ''अरियुपगुस''[21] नाम मूल शास्त्रों में दो शब्दों *Areion pagon* से निकला है। ''अरिस'' यूनान के युद्ध देवता (रोमी देवता मार्स के समान) का नाम था, और *पेगॉस* शब्द ''पहाड़ी'' के लिए था। इस प्रकार ''अरियुपगुस'' का अक्षरश: अर्थ ''अरिस की पहाड़ी [या पहाड़]'' (या अधिक परिचित यूनानी शब्द ''मार्स पर्वत'') है। यह पहाड़ी अगोरा के दक्षिण की ओर, अक्रोपुलिस के नीचे थी और अब भी है। यूनानी दंत कथा के अनुसार, अरिस (जो सदैव लड़ाई ही चाहता था) पर पोसेदोन[22] के पुत्र की हत्या के लिए इस पहाड़ी पर मुकदमा चला था और निर्दोष ठहराया गया था।[23] अथेने का अतिप्राचीन तथा प्रतिष्ठापूर्ण न्यायालय इसी पहाड़ी पर बन गया, जिसका नाम इस स्थान के नाम पर अरियुपगुस पड़ गया। नये नियम के दिनों में, यह न्यायालय उतना शक्तिशाली नहीं था जिनता पहले हुआ करता था,

परन्तु अभी भी इसका प्रभाव था।[24] विशेष अवसरों पर, अदालत इसी पहाड़ी पर लगती थी, परन्तु आम सभाएं अगोरा के उत्तर-पूर्वी शाही बरामदे में हुआ करती थीं।

''अरियुपगुस'' नाम पहाड़ी तथा न्यायालय दोनों के लिए प्रयुक्त होने के कारण, प्रश्न उठते हैं कि पौलुस को कहां ले जाया गया था और क्यों ले जाया गया था अर्थात उसे पहाड़ी की चोटी पर ले जाया गया था या अगोरा में उस स्थल पर जहां आमतौर पर अदालत लगती थी?[25] कहीं भी ले जाया गया हो, क्या यह सुनवाई औपचारिक थी या अनौपचारिक? यह तथ्य कि न्यायालय का एक अधिकारी (एक अरियुपगी) मसीही बन गया था (पद 34) यह संकेत देगा कि न्यायालय के सदस्यों में से कम से कम कुछ तो वहां उपस्थित थे, और सम्भव है कि पौलुस पर बाहर के देवताओं का प्रचार करने के कारण मुकदमा चलाया गया था।[26] परन्तु, सत्र के अन्त में (पद 32, 33) लगता है कि यह एक अनौपचारिक सुनवाई थी।

पौलुस को एक ओर ले जाने का वास्तविक उद्देश्य जो भी हो, परम्परा के अनुसार उसे अरियुपगुस नामक पहाड़ी के शिखर पर ले जाया गया था,[27] और इस और अगले पाठ में प्रयोग करने के लिए यही बिन्दु अनुकूल रहेगा। पहाड़ी के एक सिरे पर यूनानी भाषा में पौलुस के प्रवचन का सम्पूर्ण शिलालेख एक विशाल ताम्र पत्र पर लगाया गया है।[28] ''मार्स पर्वत'' पर खड़े होकर मैंने उत्तर की ओर 377 फुट नीचे प्राचीन अगोरा तथा पश्चिम की ओर अपने से ऊपर 135 फुट अक्रोपुलिस को देखा।

पौलुस को युद्ध के देवता द्वारा अगोरा में किए कार्य के कारण उसी को समर्पित पहाड़ी पर शांति के राजकुमार के बारे में बताने का विलक्षण अवसर प्राप्त होने वाला था। जब हमें लगे कि हम कुछ नहीं कर सकते, तो हमें यह कहावत याद कर लेनी चाहिए ''मैं अकेला हूं, परन्तु मैं एक हूं। मैं सब कुछ नहीं कर सकता, परन्तु मैं कुछ तो कर सकता हूं। जो भी हो मैं उसे परमेश्वर की सहायता से कर ही लूंगा!'' पौलुस ने हम सब को ''टेढ़े और हठीले लोगों के बीच ... जगत में जलते हुए दीपकों की नाईं'' चमकने की चुनौती (फिलिप्पियों 2:15) दी।

यदि आप परिणामों की चिन्ता किए बिना शिक्षा देते हैं (17:19, 20, 22, 32-34)

अथेने के लोगों ने अपने गंतव्य स्थान (जो भी था) पर पहुंचकर, पौलुस से पूछा, ''क्या हम जान सकते हैं, कि यह नया मत जो तू सुनाता है, क्या है? क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है, इसलिए हम जानना चाहते हैं कि इसका अर्थ क्या है'' (पद 19ख, 20)।

आपको क्या लगता है कि पौलुस ने उस निमन्त्रण को कैसे स्वीकार किया होगा? मानवीय दृष्टिकोण से, उसके प्रचार की ''सफलता'' अथेने में दूर-दूर तक दिखाई नहीं देती थी। यदि आराधनालय में पौलुस की शिक्षा को मानकर कोई विश्वासी बना था, तो लूका ने उसका उल्लेख नहीं किया। अगोरा में प्रचार करने के बाद पौलुस पर ''बकवादी'' और ''अन्य देवताओं का प्रचारक'' होने का ठप्पा लग चुका था। अरियुपगुस पर अपने आसपास खड़े लोगों को देखकर, उसे स्पष्ट लग रहा था कि उनकी दिलचस्पी उससे सच्चाई जानने में

नहीं, बल्कि अपनी जिज्ञासा को शांत करने में थी। फिर भी, यह प्रेरित हिचकिचाया नहीं। ''तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में[29] खड़े होकर कहा ...'' (पद 22क)।

पौलुस के महान प्रवचन का अध्ययन हम अगले पाठ में विस्तार से करेंगे। हम देखेंगे कि, दोबारा, वचन को मानने व ग्रहण करने वाले लोग स्पष्टत: कम ही थे (पद 32-34)। परन्तु, अभी के लिए, आइये इसकी प्रासंगिकता को देखें। जैसे कि पाठों की इस शृंखला में आरम्भ से ही हमने जोर देने की कोशिश की है कि परमेश्वर ने हमें प्रचार करने तथा शिक्षा देने की आज्ञा दी है (मत्ती 28:18-20)। हमारा काम प्रचार करना व सिखाना है; वचन को मनवाना परमेश्वर का काम है (1 कुरिन्थियों 3:6, 7)। अपने मन में रेखांकित कर लें कि यदि आप विश्वास से परमेश्वर के वचन का प्रचार तथा सिखाना जारी रखते हैं, तो परिणाम कुछ भी क्यों न हो, परमेश्वर की दृष्टि में आप एक सफल व्यक्ति हैं!

यदि आप अपनी पूरी कोशिश करते हैं (17:22-31)

संसार में आज अथेने के मन्दिरों और मूर्तियों को मनुष्य की कारीगरी का बेहतरीन नमूना माना जाता है। हम उनकी कला एवं भवन निर्माण को कुछ भी नाम क्यों न दें, परन्तु यूनानियों ने अपने देवताओं की मूर्तियों का सम्मान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। पौलुस ने भी सच्चे और जीवते परमेश्वर के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी थी। हो सकता है कि उसको सुनने वालों ने उसकी बात न मानी हो, परन्तु अरिस की पहाड़ी पर उसने नाशवान मनुष्य द्वारा सुनाए गए सबसे महान प्रवचनों में से एक सुनाया था।

थोड़ी देर के लिए, आइये हम प्रभु के लिए अपनी सेवा को देखें। क्या हम सदा उसे अपनी उत्तम वस्तुएं देते हैं, या कई बार हम उसकी ओर अपना छुट-पुट[30], धन, शक्ति, या योग्यता फेंकते हैं? परिणाम कुछ भी क्यों न हो, यदि आप प्रभु के लिए परिश्रम करने में अपनी पूरी कोशिश करते हैं तो आप एक सफल व्यक्ति हैं।

सारांश

अपने पाठ के आरम्भ में हमने ध्यान दिया था कि प्रभु के कार्य की सफलता को मापने के लिए, हम प्राय: इस प्रकार के प्रश्न पूछते हैं: ''आपकी चर्च बिल्डिंग कितनी बड़ी है?''; ''कितने लोगों का बपतिस्मा हुआ है?'' हम सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न शायद कम ही पूछते हैं कि ''क्या सुसमाचार का प्रचार सच्चे मन से हो रहा है?''

यदि आप मेरे पाठ की व्यक्तिगत प्रासंगिकता को नहीं समझे हों, तो मैं फिर से दोहराता हूं: यदि आप *परमेश्वर द्वारा दिए कार्य को विश्वास से पूरा कर रहे हैं* तो आप एक सफल व्यक्ति हैं। यिर्मयाह के परिश्रमों तथा यहेजकेल के प्रारम्भिक कार्य के बारे में जानने के लिए बाइबल में से पढ़ें। मानवीय दृष्टिकोण से ये दोनों ही ''असफल'' थे, परन्तु दोनों ने परमेश्वर द्वारा दिए अपने कार्यों को पूरा किया! परमेश्वर की दृष्टि में वे सफल लोग थे, और यदि आप ''जाकर वैसा ही करते'' हैं तो आप भी सफल हो सकते हैं।

प्रवचन नोट्स

ब्रूस वाइट ने प्रेरितों 17:16-34 पर एक (अप्रकाशित) प्रचवन को ''अथेने में सबसे नई बात'' कहा।

प्रेरितों 17 में सबसे अच्छा प्रवचन जो मैंने सुना है वह 1967 में ओ.सी.सी. बाइबल टीचर्स वर्कशॉप में जेम्स ओ. बेयर्ड का था। ''मीटिंग द चैलेंजेस ऑफ 1967'' शीर्षक से इस पाठ का आरम्भ आज की तरह पौलुस के दिनों में भी राजनीतिक, धार्मिक व नैतिक परिवर्तन को बताते हुए हुआ। भाई बेयर्ड ने परिवर्तन के दो अन्तिम उत्तरों की ओर ध्यान दिलाया: (1) हम इससे अतिप्रभावित हो सकते हैं, या (2) हम बिना सोचे इसके साथ चल सकते हैं। पौलुस ने इनमें से एक भी नहीं किया: (1) उसकी आत्मा संवेदनशील थी जो होने वाली घटना से कांप सकती थी, (2) उसने *कुछ* किया (कुछ न करने के विपरीत), और (3) वह मूल सिद्धांतों (''मार्स की पहाड़ी के प्रवचन'' के विषयों पर)के साथ जुड़ा रहा।

पाद टिप्पणियां

[1]पिछले पैरे में, मैंने ''कलीसिया'' की बात की थी। पूरी कलीसिया पर लागू करने के लिए, इस पाठ के मुख्य शीर्षकों को एकवचन से बहुवचन और मध्यम पुरुष से उत्तम पुरुष में बदला जा सकता है, जैसे ''यदि *हमारे हृदय* डोल सकें''; ''यदि हम वह करें जो कर सकते हैं ...''; आदि। [2]इस समय संसार के तीन बड़े विश्वविद्यालय थे; अथेने उनमें से एक था। अन्य दो मिसर में अलगज़ेड्रिया तथा पौलुस के गृह-नगर तरसुस में थे। पौलुस इन विश्वविद्यालयीय नगरों से परिचित था। [3]''अक्रोपुलिस'' ''उच्च'' (*acro*) और ''नगर'' (*polis*) शब्दों को मिलाने वाला एक यूनानी शब्द है। मूलत: इसका अर्थ है ''उच्च नगर।'' प्राचीन समयों में, अधिकांश नगरों में अक्रोपुलिस होता था, जो मन्दिरों, पुस्तकालयों आदि के रूप में नहीं बल्कि किसी आक्रमण के समय लोगों के आश्रय के रूप में भी काम करता था। नोट: यदि आप अमेरिका में रहते हैं, तो ध्यान दे सकते हैं कि अक्रोपुलिस प्राचीन पश्चिम के किले की तरह ऐसे ही उद्देश्यों के काम आता था। [4]''पारथिनोन'' ''कुंवारी'' के लिए इस्तेमाल होने वाला यूनानी शब्द है। यह अथेना को समर्पित कुंवारियों का मन्दिर था। [5]अथेना की एक अधिक प्रसिद्ध मूर्ति पारथिनोन के भीतर थी, परन्तु एक बाहर भी थी। [6]ज्यूस को यूनानी देवताओं में प्रमुख माना जाता था। ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' में ''पूजा से गालियों तक'' पाठ में 14:12 पर नोट्स देखिए। [7]मैं और मेरी पत्नी जब यूरोप तथा अन्य स्थानों में घूम रहे थे, तो मुझे प्राचीन कैथेड्रलों तथा अन्य धार्मिक इमारतों की तारीफ करना बड़ा कठिन लग रहा था। शायद उनमें कला के भण्डार हैं, परन्तु मेरे लिए वे परमेश्वर के ईश्वरीय प्रबन्ध से मनुष्य के दूर होने के स्तम्भ हैं (1 तीमुथियुस 4:1-4)। [8]पृष्ठ 71 पर ''उस समय और अब की मूर्तिपूजा'' पर अतिरिक्त लेख देखिए। [9]हम निश्चित तौर पर नहीं जान सकते कि सीलास और पौलुस अथेने में कभी पहुंचे भी थे या नहीं। प्रेरितों के काम में अगली बार उनका उल्लेख 18:5 में ही मिलता है। परन्तु, 1 थिस्सलुनीकियों 3:1, 2 से सम्भवत: संकेत मिलता है कि तीमुथियुस अथेने में आकर पौलुस के साथ फिर से मिल गया, परन्तु यह कि पौलुस ने उसे तुरन्त थिस्सलुनीके में भेज दिया। कई लोगों का अनुमान है कि सीलास भी पौलुस को अथेने में जा मिला, परन्तु पौलुस ने उसे तुरन्त ही किसी और जगह, शायद फिलिप्पी में भेज दिया। सीलास और

तीमुथियुस अन्ततः पौलुस को कुरिन्थुस में फिर से मिल गए। [10]यूनानी शब्द के अनुवाद ''वाद-विवाद'' का अर्थ ''बहसना'' भी हो सकता है (देखिए KJV)। पौलुस ने निश्चित ही आराधनालय में यीशु के मसीह होने की बहस की थी; हो सकता है उसने अथेने में मूर्तिपूजा के विरुद्ध बोलने में असफल रहने पर यहूदियों को डांटा भी हो।

[11]इस भाग में ''परमेश्वर की सहायता से बदलते जीवन'' पाठ में 16:19 पर नोट्स देखिए। [12]दुनिया भर से परदेशी अथेने में अध्ययन के लिए आते थे। [13]निस्संदेह, इसमें काम करने वाले लोग शामिल नहीं होंगे, बल्कि उन्हीं लोगों के लिए कहा गया होगा जो हर रोज अगोरा में भीड़ लगाए रखते थे। [14]अरस्तु ने फिलॉसफी की परिभाषा ''सच्चाई का विचार करने वाले विज्ञान'' के रूप में दी। [15]मेरा अनुमान है कि वे ज़ीनोवादी नहीं कहलाना चाहते थे। [16]यदि आप मेरे जैसे हैं, तो ''ड्योढ़ी'' से शब्द विनम्र सुधार का सुझाव मिलता है। ये ''ड्योढ़ियां'' बड़ी-बड़ी इमारतें, ढके हुए खम्भों की कतारें थीं जो कम से कम एक ओर से खुली होती थीं। ध्यान दें कि मूल शास्त्र में ''सुलैमान का ओसारा [KJV - ड्योढ़ी; NIV - खम्भों की कतार]'' के लिए यूनानी शब्द *स्तोया* का इस्तेमाल किया गया है (''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में पृष्ठ 108 पर 3:11 पर नोट्स देखिए)। [17]*लिगो* का अर्थ हमेशा ''उठाना'' नहीं होता, परन्तु इस संदर्भ में इसका अर्थ यही है। [18]ये लोग उस समय आम मिलते थे। आज भी वे आम मिलते हैं। [19]यूनानी में, ''यीशु'' पुलिंग है, जबकि *anastasis* स्त्रीलिंग है। मूर्तिपूजक लोग अपने देवताओं को प्रायः पुलिंग तथा स्त्रीलिंग के रूप में दिखाते थे, इसलिए यूनानियों ने सोचा होगा कि पौलुस अपने परमेश्वर के विषय में देवी तथा देवता दोनों का प्रचार कर रहा था। [20]उनके दिमाग में था, कि इन दुष्टात्माओं में शक्तियां होती थीं, परन्तु वे ''उन अनैतिक'' (देवताओं तथा देवियों) की तरह शक्तिशाली नहीं होते थे।

[21]एक प्रचारक छात्र, जिसका नाम नहीं दिया जाएगा, ने इस शब्द को ''हेयरी ओक्टोपस'' अर्थात आठ भुजाओं वाला बालदार जन्तु पढ़ा। [22]यूनानी दंतकथा में, पोसेदोन (रोमी देवता नैपचुन के सदृश) समुद्र का देवता था। [23]एक समय, पहाड़ी पर अरिस का एक मन्दिर था। [24]मुझे बताया गया है कि यूनानी न्यायालय जिसे अरियुपगुस कहा जाता था, आज भी लगता है। [25]कुछ लोगों का विचार है कि ''अरियुपगुस के बीच में खड़ा होकर'' (आयत 22) वाक्यांश पहाड़ी के बजाय न्यायालय का पक्ष लेता है, परन्तु मेरा मानना है कि पौलुस पहाड़ी की चोटी पर बीच में खड़ा हो सकता था। [26]यदि पौलुस मार्स की पहाड़ी पर था, तो सुकरात पर मान्य धर्म को बिगाड़ने के कारण इसी जगह पर मुकदमा चलाकर दोषी ठहराया गया था। [27]निजी तौर पर, मुझे लगता है कि पौलुस को अगोरा के भीड़ भाड़ वाले क्षेत्र से दूर ले जाया गया था। [28] यह विडंबना ही है कि, सामूहिक रूप में अथेने के लोग पौलुस के प्रवचन से प्रभावित नहीं हुए थे, परन्तु अब उनकी संतान ने इस स्मृति में एक ताम्र पत्र लगवा दिया है। [29]चौथी शताब्दी के लातीनी संस्करण के बाद, KJV में यहां पर ''मार्स की पहाड़ी'' मिलता है। बहुत से मसीहियों के लिए, प्रेरितों 17 में पौलुस का प्रवचन ''अथेनो की पहाड़ी पर पौलुस का प्रवचन'' ही रहेगा। [30]भोजन खा लेने के बाद बचे हुए टुकड़ों को ''छुट-पुट'' कहा गया है। बचा-खुचा भोजन अर्थात ''छुट-पुट'' कभी-कभी घर के कुत्ते को डाल दिया जाता है। हम में से कई लोग अपने जीवनों की केवल जूठन अर्थात बचा-खुचा देकर परमेश्वर के साथ घर के कुत्ते जैसा व्यवहार करते हैं।